॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

कृष्णयजुर्वेदीय

रुद्रहृदयोपनिषद्

शान्तिपाठ

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै॥
ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

भगवान् रुद्रकी सर्वश्रेष्ठता, सर्वस्वरूपता और ब्रह्मस्वरूपता

हरिः ॐ रुद्रहृदय, योगकुण्डली, भस्मजाबाल, रुद्राक्षजाबाल और गणपति—ये पाँच उपनिषद् प्रणवके मूल तत्त्वको बतलाते हैं। ये श्रुतिके महावाक्य हैं, ब्रह्मज्ञानात्मक अग्निहोत्रके ये पाँच महामन्त्र हैं अथवा मुक्तिकी प्राप्तिके लिये पाँच ब्रह्म अर्थात् मन्त्रात्मक अग्निहोत्र हैं॥ १॥

श्रीशुकदेवजीने व्यासजीके चरणोंमें सिर झुकाकर प्रणाम किया और बोले, 'भगवन्! बतलाइये, सब वेदोंमें किस एक देवताका प्रतिपादन हुआ है और किसमें सारे देवता वास करते हैं? किसकी सेवा-पूजा करनेसे सर्वदा सब देवता मुझपर प्रसन्न रहेंगे?' श्रीशुकदेवजीकी इस बातको सुनकर उनके पिता उनसे बोले—"शुक! सुनो—भगवान् रुद्र सर्वदेवस्वरूप हैं और सब देवता रुद्रस्वरूप हैं। रुद्रके दक्षिणपार्श्वमें सूर्यभगवान्, ब्रह्माजी तथा गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि और आहवनीय—ये तीन प्रकारके अग्निदेव स्थित हैं। वामपार्श्वमें भगवती उमा, विष्णुभगवान् और सोम—ये तीन हैं। जो भगवती उमा हैं, वही विष्णुभगवान् हैं और जो विष्णुभगवान् हैं, वही चन्द्रमा हैं। जो गोविन्दको नमस्कार करते हैं, वे शङ्करजीको नमस्कार करते हैं और जो भक्तिपूर्वक विष्णुभगवान्की अर्चना करते हैं, वे वृषभध्वज अर्थात् शङ्करजीकी ही पूजा करते हैं। जो विरूपाक्ष अर्थात् भगवान् आशुतोषसे द्वेष करते हैं, वे जनार्दनसे ही द्वेष करते हैं। जो रुद्रको नहीं जानते, वे केशवको भी नहीं जानते। रुद्रसे बीज उत्पन्न होता है और उस बीजकी योनि (अर्थात् क्षेत्र) विष्णुभगवान् हैं जो रुद्र हैं, वे स्वयं ब्रह्मा हैं और जो ब्रह्मा हैं, वे अग्निदेव हैं। रुद्र ब्रह्मा और विष्णुस्वरूप हैं और अग्नि-सोमात्मक समस्त जगत् भी रुद्र ही है। सृष्टिमें जितने पुँल्लिङ्ग प्राणी हैं, सब महेश्वर हैं और जितने स्त्रीलिङ्ग प्राणी हैं, सब भगवती उमा हैं। सारी स्थावर और जङ्गमस्वरूप सृष्टि उमा-महेश्वररूप है। समस्त व्यक्त जगत् उमाका स्वरूप है और अव्यक्त जगत् महेश्वरका स्वरूप है। उमा और शङ्करका योग ही विष्णु कहलाता है। जो उन विष्णुभगवान्को भक्तिपूर्वक नमस्कार करते हैं, वे आत्मा, परमात्मा और अन्तरात्मा—इस त्रिविध आत्माको जानकर परमात्माको प्राप्त होते हैं। अन्तरात्मा ब्रह्मा हैं और परमात्मा महेश्वर हैं। और सभी प्राणियोंके सनातन आत्मा विष्णुभगवान् हैं इस त्रिलोकीरूप वृक्षके, जिसके तने और शाखाएँ भूमिपर फैली हुई हैं, अग्रभाग विष्णु हैं। मध्य (तना) ब्रह्मा हैं और

मूलभाग भगवान् महेश्वर हैं। विष्णु कार्यरूप हैं, ब्रह्मा क्रियारूप हैं और महेश्वर कारणस्वरूप हैं। प्रयोजनके अनुसार रुद्रने अपनी एक ही मूर्तिको तीन प्रकारसे व्यवस्थित किया है। धर्म रुद्रस्वरूप है, जगत् विष्णुस्वरूप है और समस्त ज्ञान ब्रह्मास्वरूप हैं। '**श्रीरुद्र रुद्र रुद्र**' इस प्रकारसे जो बुद्धिमान् जपता है, इससे समस्त देवोंका कीर्तन हो जानेके कारण वह सब पापोंसे मुक्त हो जाता है॥ २—१६॥

"पुरुष रुद्रस्वरूप हैं और स्त्रियाँ उमास्वरूपा हैं—इन दोनों प्रकारके रूपोंमें भगवान् रुद्र और भगवती उमाको नमस्कार है। रुद्र ब्रह्मा हैं और उमा वाणी हैं। इन दोनों रूपोंमें रुद्र और उमाको नमस्कार। रुद्र विष्णु हैं और उमा लक्ष्मी हैं। उनको और उनको नमस्कार। रुद्र सूर्य हैं और उमा छाया हैं। उनको और उनको नमस्कार। रुद्र चन्द्रमा हैं और उमा तारा हैं, उनको और उनको नमस्कार। रुद्र दिवस हैं और उमा रात्रि हैं। उनको और उनको नमस्कार। रुद्र यज्ञ हैं और उमा वेदी हैं। उनको और उनको नमस्कार। रुद्र अग्निदेव हैं और उमा स्वाहा हैं। उनको और उनको नमस्कार। रुद्र वेद हैं और उमा शास्त्र हैं। उनको और उनको नमस्कार। रुद्र वृक्ष हैं और उमा लता हैं। उनको और उनको नमस्कार। रुद्र गन्ध हैं और उमा पुष्प हैं। उनको और उनको नमस्कार। रुद्र अर्थ हैं और उमा अक्षर हैं। उनको और उनको नमस्कार। रुद्र लिङ्ग हैं और उमा पीठ हैं। उनको और उनको नमस्कार। इस प्रकार सर्वदेवात्मक रुद्रको पृथक्-पृथक् नमस्कार करे। मैं भी इन्हीं मन्त्रपदोंके द्वारा महेश्वर और पार्वतीको नमस्कार करता हूँ। मनुष्य जहाँ-जहाँ रहे, इस अर्धालीसहित मन्त्रका उच्चारण करता रहे। ब्रह्महत्यारा भी यदि जलमें प्रविष्ट होकर इस मन्त्रका जाप करे तो सब पापोंसे मुक्त हो जाता है"॥ १७—२५॥

"जो सबका अधिष्ठान है, द्वन्द्वातीत है, सच्चिदानन्दस्वरूप, सनातन परम ब्रह्म है, मन और वाणीके अगोचर है, शुक! उसके भलीभाँति जान लेनेपर यह सब ज्ञात हो जाता है; क्योंकि सब कुछ उसका ही स्वरूप है, उससे भिन्न कुछ भी नहीं है। दो विद्याएँ जाननेयोग्य हैं—वे हैं परा और अपरा। उनमें अपरा विद्या यह है—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्यौतिष तथा मुनीश्वर! इस अपरा विद्यामें आत्मविषयके अतिरिक्त सब प्रकारके बौद्धिक ज्ञानका समावेश हो जाता है। अब परा विद्या वह है, जिसके द्वारा आत्मविषयका ज्ञान होता है। वह आत्मतत्त्व परम अविनाशी है। वह देखनेमें नहीं आता, ग्रहण नहीं किया जाता। नाम-रूप और गोत्रसे वर्जित है। उसके चक्षु और श्रोत्र नहीं हैं। वह विषयातीत है, उसके हाथ-पैर नहीं हैं; वह नित्य है, विभु है, सर्वगत है, सूक्ष्म-से-सूक्ष्म है तथा वह कभी विकारको प्राप्त नहीं होता। वह सब भूतोंका प्रभव-स्थान है, उस परमात्माको धीर पुरुष अपने आत्मामें देखते हैं"॥ २६—३२॥

"जो सर्वज्ञ है—जिसे भूत-भविष्य-वर्तमानका ज्ञान है, जो सम्पूर्ण विद्याओंका आश्रय है, ज्ञान ही जिसका तप है, उसीसे भोक्ता एवं अन्नरूपमें यह समस्त जगत् उत्पन्न होता है। जो जगत् सत्यकी तरह प्रतीत होता है, वह सब ब्रह्ममें उसी प्रकार स्थित है, जैसे रज्जुमें सर्प। वही यह अविनाशी ब्रह्म सत्य है; जो इसको जानता है, वह मुक्त हो जाता है। ज्ञानसे ही संसार-बन्धनका नाश होता है, कर्मसे नहीं। अतएव मुमुक्षुको विधिपूर्वक श्रोत्रिय, ब्रह्मनिष्ठ अपने गुरुके पास जाना चाहिये। तब गुरु उसे ब्रह्म और आत्माके एकत्वका ज्ञान करानेवाली परा विद्या प्रदान करे। यदि पुरुष गुहामें निहित उस अक्षरब्रह्मको साक्षात् कर लेता है तो अविद्यारूपी महाग्रन्थिको काटकर वह सनातन शिवके पास पहुँच जाता है। यही वह अमृतरूप सत्य है, जो मुमुक्षुओंको जानना चाहिये"॥ ३३—३७॥

"प्रणव धनुष है, आत्मा बाण है और ब्रह्म वह लक्ष्य कहलाता है। उसको प्रमादरहित होकर बींधना (चिन्तन करना) चाहिये तथा लक्ष्यमें घुसे हुए बाणकी भाँति ही उस ब्रह्ममें तन्मय हो जाना चाहिये। लक्ष्य अर्थात् ब्रह्म सर्वगत है। शर अर्थात् आत्मा सब ओर मुखवाला है और वेद्धा अर्थात् साधक यदि सर्वगत हो

तो शिवरूप लक्ष्यकी प्राप्तिमें संशय नहीं रह जाता। जहाँ चन्द्रमा और सूर्यका विग्रह प्रकाशित नहीं होता, जहाँ वायु तथा सम्पूर्ण देवताओंकी भी गति नहीं है, वे ही ये तेजोमय परमात्मा साधकके द्वारा चिन्तन करनेपर अपने विशुद्ध एवं रजोगुणरहित स्वरूपसे प्रकाशित होते हैं। इस शरीररूपी वृक्षमें जीव और ईश्वर नामके दो पक्षी निवास करते हैं। उनमें जीव कर्मोंका फल भोगता है, महेश्वर नहीं। महेश्वर कर्मफलका भोग न करते हुए केवल साक्षीरूपमें प्रकाशित हो रहा है, उसमें जीव और ईश्वरका भेद मायाके द्वारा कल्पित है। जिस प्रकार घटाकाश और महाकाश आकाशके ही कल्पित भेद हैं, उसी प्रकार परमात्माके जीव और ईश्वररूप भेद भी कल्पित हैं। वस्तुत: जो चिन्मय जीवात्मा सदा स्वत: साक्षात् शिव है। जीव और ईश्वरमें जो चित् है, वह चित्के औपाधिक आकार-भेदसे भिन्न-भिन्न प्रतीत होती है, स्वरूपत: भिन्न नहीं है; क्योंकि स्वरूपत: भेद होनेपर तो दोनोंकी चित्स्वरूपताकी ही हानि हो जायगी। (जड वस्तुमें ही स्वरूपगत भेद होता है, चित्में नहीं।) चित्से जो चित्का भेद कहा जाता है, वह चिदाकारता (चिन्मयता)-से नहीं, अपितु जडरूप उपाधिके ही कारण है। यदि भेद है तो वह भेद जडरूप ही है। चित् तो सर्वत्र एक ही होती है। युक्ति और प्रमाणसे चित्की एकता ही निश्चित होती है; इसलिये जब पुरुषको चित्के एकत्वका परिज्ञान हो जाता है, तब वह न शोकको प्राप्त होता है न मोहको। वह केवल अद्वैत परमानन्दस्वरूप शिवभावको प्राप्त हो जाता है। समस्त जगत्का अधिष्ठान वह सत्यस्वरूप चिद्घन परमात्मा है। मुनिलोग उसे '**अहम् अस्मि**' (वह परमात्मा मैं ही हूँ) ऐसा निश्चय करके शोकरहित हो जाते हैं। अपने अन्त:करणमें स्वयंज्योति:स्वरूप सर्वसाक्षी परमात्माको वे ही पुरुष देखते हैं, जिनके दोष क्षीण हो गये हैं; जो मायासे आवृत हैं, वे इतर प्राणी नहीं देख सकते। जिस महायोगीको इस प्रकार स्वरूप-ज्ञान हो गया है, उस पूर्णस्वरूपताको प्राप्त हुए सिद्ध महात्माका कहीं आना-जाना नहीं होता। जिस प्रकार एक और पूर्ण आकाश कहीं नहीं जाता, उसी प्रकार अपने आत्मतत्त्वका अनुभव करनेवाला ज्ञानी महात्मा कहीं नहीं जाता। जो मुनि निश्चयपूर्वक उस परम ब्रह्मको जानता है, वह अपने स्वरूपमें स्थित हो, सच्चिदानन्दस्वरूप ब्रह्म ही हो जाता है''॥ ३८—५२॥

॥ कृष्णयजुर्वेदीय रुद्रहृदयोपनिषद् समाप्त॥

शान्तिपाठ

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै॥
ॐ शान्ति:! शान्ति:!! शान्ति:!!!

आठ गुणोंसे युक्त आत्माको जाननेका फल

य आत्मापहतपाप्मा विजरो विमृत्युर्विशोको विजिघत्सोऽपिपास: सत्यकाम: सत्यसङ्कल्प: सोऽन्वेष्टव्य: स विजिज्ञासितव्य: स सर्वांश्च लोकानाप्नोति स सर्वांश्च कामान्यस्तमात्मानमनुविद्य विजानातीति ह प्रजापतिरुवाच। (छान्दोग्य० ८।७।१)

प्रजापतिने कहा—जो आत्मा पापरहित, जरा (बुढ़ापा)-रहित, मृत्युरहित, शोकहीन, भूखसे रहित, प्याससे रहित, सत्यकाम और सत्यसङ्कल्प (इन आठ स्वभावगत गुणोंसे युक्त) है, उसे खोजना चाहिये, उसे जानना चाहिये। जो उसको खोजकर जान लेता है, वह सब लोकोंको और समस्त कामनाओंको प्राप्त हो जाता है।